बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 142 ● नई दिल्ली ● वीरवार 19 मार्च 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

सीएम रेखा गुप्ता ने किया निर्मल छाया कॉम्प्लेक्स का दौरा, जुवेनाइल जस्टिस मैनेजमेंट किया लॉन्च

नई दिल्ली । दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने आज नॉर्मल छाया कॉम्प्लेक्स का विस्तृत दौरा किया। इस दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण और बाल कल्याण के लिए चलाई जा रही सरकारी योजनाओं की समीक्षा की। दौरे का मुख्य आकर्षण जुवेनाइल जस्टिस मैनेजमेंट इन्फॉर्मेशन पोर्टल का शुभारंभ रहा, जिसे बाल संरक्षण प्रणाली में पारदर्शिता लाने के लिए विकसित किया गया है। सीएम ने परिसर के भीतर संचालित महिला हाट, समर्थ आंगनवाड़ी और संकल्प हब का निरीक्षण किया। वहां पर काम करने वाली महिलाओं से बातचीत करते हुए सीएम ने उनके आत्मविश्वास और आत्मनिर्भर बनने के जज्बे की सराहना की।

रूप नगर हादसे के बाद दिल्ली में सभी लोहे के पुलों का होगा ऑडिट, 48 घंटे में रिपोर्ट देगी जांच समिति

नई दिल्ली । उत्तरी दिल्ली के रूप नगर में नजफगढ़ नाले पर 33 साल पुराने फुट ओवरब्रिज के गिरने और एक महिला की मौत के बाद प्रशासन हरकत में आया है। दिल्ली के सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने घटना की जांच के लिए 3 सदस्यीय समिति गठित करने का आदेश दिया है। यह समिति पुल गिरने के तकनीकी कारणों और विभागीय चूक की पड़ताल कर 48 घंटे के भीतर रिपोर्ट पेश करेगी। इस हादसे के मद्देनजर दिल्ली में मौजूद सभी पुराने लोहे के फुट ओवरब्रिज का स्ट्रक्चरल ऑडिट कराने का फैसला लिया गया है। मंत्री ने निर्देश दिए हैं कि इंजीनियरिंग टीम शहर भर के ऐसे पुलों की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करें, ताकि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि जर्जर हो चुकी संरचना ही इस हादसे की मुख्य वजह थी। अब जांच रिपोर्ट के आधार पर यह तय किया जाएगा कि इस जर्जर ढांचे को समय रहते पूरी तरह हटाने या मरम्मत करने में कहां और किससे लापरवाही हुई। इससे पहले मंगलवार सुबह नजफगढ़ ड्रेन (नाले) पर बना करीब 33 साल पुराना जर्जर लोहे का पुल अचानक भरभराकर गिर गया। पुल गिरते ही उसके बीचों-बीच उस पर बैठी 60 साल की एक बुजुर्ग महिला नाले में जा गिरी। लोगों ने आनन-फानन में मामले की सूचना पुलिस व रेस्क्यू टीम को दी। खबर मिलते ही पुलिस के अलावा दमकल विभाग, एनडीआरएफ, बोट क्लब व अन्य एजेंसियां मौके पर पहुंचीं, राहत और बचाव कार्य शुरू किया। काफी मशक्कत के बाद महिला को नाले से निकालकर नजदीकी अस्पताल भेजा गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। फिलहाल उसकी पहचान नहीं हो पाई है। जिला पुलिस उपायुक्त राजा बांठिया ने बताया कि बुजुर्ग महिला पुल के बीच में बैठकर भीख मांगती थी। हादसे के समय उसे भागने का मौका नहीं मिला। उसका शव कब्जे में

लेकर मोर्चरी भेज दिया गया है। पुलिस उसकी पहचान करने का प्रयास कर रही है। रूप नगर थाना पुलिस मामला दर्ज कर जांच कर रही है। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि हादसा मंगलवार सुबह करीब 9.25 बजे रूप नगर ब्लॉक-3 में हुआ। यहां करीब सात दशक पहले से नजफगढ़ ड्रेन पर लोहे का एक पतला-संकरा और छोटा पुल बना हुआ है। इसका इस्तेमाल पैदल गुजरने वाले राहगीर और कभी-कभार बाइक या स्कूटी वाले भी कर लेते थे। सूत्रों ने बताया कि नाला सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग का है और उसकी देखरेख का जिम्मा भी इसी विभाग का है। काफी पुराना होने के कारण यह जर्जर हो चुका था। पुल कई जगह से गल भी चुका था। इसका ध्यान में रखते हुए पिछले साल से ही पुल को बैरिकेड लगाकर बंद कर दिया गया था। लेकिन गुड़ मंडी-राजपुरा से रूप नगर जाने वाले लोग लगातार इस पुल का इस्तेमाल कर रहे थे। वहीं पुल पर अक्सर एक बुजुर्ग महिला बैठकर भीख मांगती थी। एक प्रत्यक्षदर्शी संजू नामक युवती ने बताया कि वह गुड़मंडी से रूप नगर जा रही थी। अचानक पुल गिरने लगा।

वह भागकर सुरक्षित पहुंच गई, लेकिन पुल पर बैठी वह बुजुर्ग महिला नाले में जा गिरी। हादसे की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे बोट क्लब की टीम ने कई घंटों की मशक्कत के बाद बुजुर्ग महिला का शव नाले से निकाला। अब रूप नगर थाना पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन कर रही है।

इस बात का पता लगाया जा रहा है कि हादसे की क्या वजह थी। क्राइम टीम व एफएसएल ने भी मौके का मुआयना किया है।

स्कूल के समय गिरता पुल तो होता बड़ा हादसा

गुड़मंडी में रहने वाले बुजुर्ग श्याम प्रसाद ने बताया कि रूप नगर में कई सरकारी स्कूल हैं। गुड़मंडी, राजपुरा और आसपास की कई कालोनियों से भारी मात्रा में बच्चे स्कूल जाते हैं। अक्सर बच्चों की भीड़ पुल को क्रॉस करती है। ऐसे में यदि बच्चों के आने या जाने के समय हादसा हुआ होता तो बड़ा हो सकता है। दूसरी ओर रूप नगर के कुछ लोग पुल गिरने को सही बता रहे थे, उनका कहना था कि गुड़-मंडी-राजपुरा की ओर से कई असामाजिक तत्व आकर चोरी या दूसरी वारदातों को अंजाम देते हैं। पुल गिरने से उनके यहां वारदातों में कमी आएगी।

अब कई किलोमीटर का लगाना पड़ेगा चक्कर

स्थानीय लोगों ने बताया कि गुड़-मंडी, राजपुरा और आसपास की कई कालोनियों से भारी मात्रा में छात्र के अलावा काम करने वाली महिलाएं व दूसरे लोग भी इस पुल का इस्तेमाल कर रहे थे। दरअसल यह पुल गुड़मंडी और रूप नगर को जोड़ने के लिए शॉर्ट कट था। पुल न होने की वजह से अब उनको कई किलोमीटर का चक्कर काटकर आना होगा।

मोहब्बत हमसे, शादी उनसे? देवेगौड़ा पर खरगे का तंज, रायसभा में लगे ठहाके, प्रधानमंत्री मोदी भी मुस्कुराए

नई दिल्ली । रायसभा में सांसदों की विदाई के दौरान विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने अपने मजाकिया अंदाज से सबको लोटपोट कर दिया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा और केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले पर ऐसी बातें कहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए। सदन को संबोधित करते हुए खरगे ने देवेगौड़ा का जिक्र किया। उन्होंने तंज कसते हुए कहा, मैं देवेगौड़ा को 54 वर्षों से जानता हूं।

उनके साथ ही मैंने काम किया, लेकिन क्या हुआ मुझें मालूम नहीं। उन्होंने प्रेम हमारे साथ किया, मोहब्बत हमारे साथ किया और शादी मोदी साहब के साथ कर ली। ये जल्दी ही हुआ कैसे हुआ मुझे मालूम नहीं। खरगे की इस बात पर पीएम मोदी सहित पूरा सदन ठहाकों से गुंज उठा। इसके बाद उन्होंने रामदास अठावले पर भी मजाकिया अंदाज में निशाना साधा। खरगे ने हंसते हुए

कहा कि अठावले अपनी कविताओं में हमेशा पीएम मोदी की तारीफ करते हैं। लगता है कि अठावले को मोदी जी की तारीफ के अलावा कोई और कविता आती ही नहीं है। जिससे सदस्यों के बीच फिर से हंसी की लहर दौड़ गई। इस सबके बीच खरगे ने एक बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि राजनीति या सार्वजनिक जीवन में लोग न तो कभी थकते हैं और न ही सेवानिवृत्त होते हैं। देश सेवा का जुनून पदों से परे हमेशा बना रहता है। खरगे ने जोर देकर कहा कि सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोग हमेशा कर्तव्य की भावना से प्रेरित रहते हैं, चाहे उनका कार्यकाल रहे या न रहे।

सांसदों को दी शुभकामनाएं

खरगे खुद भी जून में रायसभा से सेवानिवृत्त होने वाले हैं। उन्होंने अप्रैल से जुलाई के बीच सेवानिवृत्त होने वाले सांसदों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि रायसभा एक स्थायी और निरंतर चलने वाला सदन है। यहां हर छह साल में सदस्य चुनकर आते हैं और हर दो साल में एक-तिहाई सदस्य सेवानिवृत्त होते हैं। खरगे ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि इस सदन में उनका समय बहुत अच्छा रहा। उन्होंने कहा कि इतने वर्षों की राजनीति के बाद भी उन्हें यहां बहुत कुछ सीखने को मिला।

शरद पवार के वापस आने पर जताई खुशी

खरगे ने शरद पवार के सदन में वापस आने पर खुशी जताई। साथ ही उन्होंने दिग्विजय सिंह, के.टी.एस. तुलसी और अभिषेक मनु सिंघवी के योगदान की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि इन नेताओं ने संसदीय चर्चाओं को बहुत बेहतर बनाया है और उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।

लोकसभा से निलंबन रद्द होने के बाद राहुल गांधी ने सांसदों से की मुलाकात, संसद की कार्यवाही पर चर्चा

नई दिल्ली । लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को कांग्रेस सांसदों से मुलाकात की। यह वे सांसद हैं जिनका निलंबन मंगलवार को रद्द किया गया था। उन्होंने नई दिल्ली में उनके साथ चाय और कॉफी साझा की। यह अनौपचारिक बैठक केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू की ओर से सदन में पेश किए गए प्रस्ताव के बाद आठ कांग्रेस सांसदों का निलंबन वापस लेने के एक दिन बाद हुई। यह निरस्तीकरण बजट सत्र की कार्यवाही के दौरान कांग्रेस के कुछ सदस्यों के आचरण पर कांग्रेस नेतृत्व की ओर से खेद व्यक्त करने के बाद हुआ। पार्टी सूत्रों के अनुसार, विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने फैसले के बाद सांसदों से बातचीत की। इसके साथ ही निलंबन और उसके निरस्तीकरण से संबंधित घटनाक्रमों पर चर्चा की। सांसदों ने उन्हें निलंबन की अवधि के दौरान सदन में घटी घटनाओं के बारे में भी जानकारी दी। निलंबित सांसदों में अमरिंदर सिंह राजा वारिंग, मणिकम टैगोर, गुरजीत सिंह औजला, हिबी ईडन, सी. किरण कुमार रेड्डी, प्रशांत यदाओराव पाडोले, एस. वेंकटेश और डीन कुरियाकोस शामिल हैं, ये सभी कांग्रेस पार्टी से संबंधित हैं। दरअसल, लोकसभा में तीखी बहस के दौरान कार्यवाही में बाधा डालने और अध्यक्ष की ओर कागज फेंकने के आरोपों के बाद आठ सांसदों को 3 फरवरी को बजट सत्र के शेष समय के लिए निलंबित कर दिया गया था। इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए कई कांग्रेस सांसदों ने निलंबन रद्द किए जाने का स्वागत किया। इस मुद्दे को सुलझाने के लिए पार्टी नेतृत्व और अध्यक्ष को धन्यवाद दिया। इसके साथ ही, उन्होंने कहा कि विपक्ष सार्वजनिक मुद्दों को उठाना जारी रखेगा संसद में विपक्षी सदस्यों के साथ हो रहे भेदभाव के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करेगा। सांसदों ने कहा कि संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सदन में जनता की चिंताओं को उठाने के लिए बहसों और चर्चाओं में उनकी भागीदारी आवश्यक है।

नवरात्रि का शुभारंभ : यात्रियों और श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण सलाह जारी

नई दिल्ली । इस बार नवरात्रि का शुभारंभ 19 मार्च से हो रहा है. ऐसे में दिल्ली की ट्रैफिक पुलिस ने झंडेवालान माता मंदिर आने वाले यात्रियों और श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण सलाह जारी की है. नौ दिनों का यह त्योहार 27 मार्च तक चलेगा. इस दौरान मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना है, जिससे आसपास के इलाकों में भारी जाम लग सकता है. यही वजह है कि सेंट्रल दिल्ली की प्रमुख सड़कों पर यातायात प्रभावित हो सकता है. खासकर ऑफिस आवर्स के दौरान. ऐसे में अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि अपने ट्रैवल प्लान पहले से बना लें. अनावश्यक जाम से बचने और सुचारू यातायात सुनिश्चित करने के लिए सुझाए गए डायवर्जन का इस्तेमाल करें. ट्रैफिक एडवाइजरी के मुताबिक, रानी झांसी रोड और देश बंधु गुप्ता रोड पर, विशेष रूप से पहाड़गंज चौक और कालकादास चौक के बीच के मार्ग पर, यातायात जाम होने की आशंका है. मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं की भारी संख्या के कारण इन मार्गों पर वाहनों की आवाजाही अधिक रहने की संभावना है. भीड़ को नियंत्रित करने के लिए, स्थिति के अनुसार यातायात मार्ग बदले जा सकते हैं. सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट और करोल बाग की ओर जाने वाले यात्रियों को फैज रोड होते हुए वैकल्पिक मार्ग अपनाने की सलाह दी गई है. बुजुर्गों से अनुरोध है कि वे रानी झांसी रोड से बचने के लिए पंचकुइयां रोड का इस्तेमाल करें ताकि वे आसानी से अपने गंतव्य तक पहुंच सकें. दिल्ली यातायात पुलिस ने स्पष्ट कर दिया है कि झंडेवालान मंदिर के पास किसी भी प्रकार की अवैध पार्किंग की अनुमति नहीं होगी. मंदिर के आसपास की मुख्य सड़कों पर गलत तरीके से पार्क किए गए वाहनों पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी. इस कदम का उद्देश्य सड़क जाम को रोकना और यातायात की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करना है. अधिकारियों ने लोगों से जमीनी स्तर पर तैनात यातायात कर्मियों के साथ सहयोग करने का भी अनुरोध किया है.

यमुना निरीक्षण के लिए दिल्ली सरकार खरीदेगी दो वीआईपी नावें, 6.2 करोड़ का टेंडर होगा जारी

नई दिल्ली । दिल्ली सरकार यमुना नदी के निरीक्षण के लिए दो वीआईपी नावें खरीदने जा रही है. इसके लिए सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण विभाग यानी I&FC की ओर से करीब 6.2 करोड़ रुपये का टेंडर जारी किया जाएगा. प्रत्येक नाव की कीमत करीब 3.10 करोड़ रुपये होगी. टेंडर प्रक्रिया जल्द पूरी होने की संभावना है जबकि सप्लायर तय होने के बाद नावों की खरीद में लगभग 5 महीने का समय लग सकता है. सरकारी अधिकारियों के अनुसार यमुना सफाई अभियान के तहत नदी का निरीक्षण करने के लिए वीआईपी और वरिष्ठ अधिकारियों को इन नावों का उपयोग करना होगा. इन नावों के जरिए यमुना की स्थिति का प्रत्यक्ष जायजा लिया जा सकेगा और सफाई कार्यों की निगरानी की जा सकेगी. इन हाई-एंड नावों में कई आधुनिक सुविधाएं होंगी. नाव में एसी युक्त बंद केबिन होगा जिसमें बिजनेस क्लास जैसी वीआईपी सीटें लगाई जाएंगी. खाने-पीने के लिए पेंट्री की व्यवस्था होगी और वॉशरूम की भी सुविधा उपलब्ध रहेगी. इसके अलावा नाव में 400 लीटर पानी स्टोरेज की क्षमता होगी. नाव के

पीछे एक ओपन डेक भी होगा जहां वीआईपी सार्वजनिक कार्यक्रमों या निरीक्षण के दौरान बैठ सकेंगे. प्रत्येक नाव में 16 से 20 लोगों के बैठने की सुविधा होगी. यमुना जो दिल्ली में सबसे प्रदूषित नदियों में से एक मानी जाती है उसकी सफाई के लिए वीआईपी निरीक्षण नावों पर 6.2 करोड़ रुपये खर्च करने का यह फैसला चर्चा का विषय बन सकता है. सवाल यह उठता है कि बिजनेस क्लास सीट, पेंट्री और 8 केबिन जैसी सुविधाओं से लैस इन महंगी नावों की जरूरत क्या सिर्फ नदी निरीक्षण के लिए है. टेंडर जारी होने के बाद यह प्रक्रिया आगे बढ़ेगी.

उत्तर नगर में ईद पर खून की होली की धमकी, इलाके में तनाव; कांग्रेस सांसद ने गृह मंत्री को लिखा पत्र

नई दिल्ली ।

उत्तम नगर में हुई तरुण की हत्या के बाद इलाके में शांति भंग और हिंसा की आशंका के बीच मुस्लिम समुदाय को धमकियां मिलने का मामला सामने आया है। इलाके के निवासियों को ईद के दौरान खून की होली खेलने की धमकियां मिलने का आरोप है। दिल्ली उच्च न्यायालय में अर्जी दाखिल की गई है। इस पर आज कोर्ट में सुनवाई हो रही है। वकील ने अदालत को बताया कि हिंदू संगठनों के ईद पर होली खेलने के दावे से मुस्लिम समुदाय में दंगे की आशंका है।

कांग्रेस सांसद ने गृह मंत्री को लिखा पत्र

कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद और कुछ अन्य विपक्षी सांसदों ने बुधवार को गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा। यह पत्र उत्तमनगर में मुसलमानों को कथित धमकियों के संबंध में लिखा गया है। उन्होंने दिल्ली पुलिस को ÷नफरत फैलाने वालों÷ के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश देने का आग्रह किया।

उत्तम नगर में मुसलमानों को कथित धमकियां

जावेद का यह पत्र इस महीने की शुरुआत में एक व्यक्ति की हत्या के बाद आया है। रविवार को कई दक्षिणपंथी हिंदू संगठनों ने पश्चिम दिल्ली के उत्तमनगर में विरोध प्रदर्शन किया था। उन्होंने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की थी।

चार मार्च को होली समारोह के दौरान तरुण की हत्या हुई थी। यह घटना उसके परिवार और पड़ोसियों के बीच एक गुब्बारा फेंकने के बाद हुई झड़प के बाद हुई। कुछ हिंदू संगठनों ने हत्या के विरोध में प्रदर्शन किया और आरोपी परिवार के दो वाहन जला दिए थे। जावेद ने शाह को लिखे पत्र में कहा कि मुस्लिम समुदाय खुलेआम धमकियों, डराने-धमकाने और डर पैदा करने के व्यवस्थित प्रयास का सामना कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह कानून व्यवस्था का कोई अलग-थलग मुद्दा नहीं है, बल्कि लक्षित शत्रुता का एक पैटर्न है। जावेद ने पुलिस की चयनात्मक या अपर्याप्त प्रतिक्रिया पर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जब धमकियां खुले तौर पर दी जाती हैं और उन पर अंकुश नहीं लगाया जाता, तो कानून प्रवर्तन में जनता का विश्वास कम होता है। इससे सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने वालों को बढ़ावा मिलता है। सांसद ने जोर देकर कहा कि संविधान नागरिकता को शर्त के रूप में डर की अनुमति नहीं देता। जावेद ने शाह से स्थिति का तत्काल संज्ञान लेने और कानून व्यवस्था बनाए रखने में किसी भी चूक के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने का आग्रह किया। उन्होंने दिल्ली पुलिस को नफरत फैलाने वालों के खिलाफ निष्पक्ष कार्रवाई करने का निर्देश देने की मांग की है।

महाभियोग प्रस्ताव

फिर से चुनावी मौसम आ गया। अगले माह असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं और विभिन्न राजनीतिक दल मतदाताओं को लुभाने के लिए 'मुझे वोट दो' के लिए चुनावी केक परोस रहे हैं और इस चुनावी नौटंकी के बीच 193 सांसदों ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव पेश किया है। हालांकि हाल ही में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव को सदन ने अस्वीकार किया। लोकसभा अध्यक्ष पर आरोप लगाया गया था कि वह सदन के निष्पक्ष कार्यकरण को सुनिश्चित करने में विफल रहे हैं। अब इन सांसदों ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त के विरुद्ध पक्षपात, भेदभावपूर्ण आचरण, वोट चोरी, चुनावी धोखाधड़ी की जांच में बाधा डालने, मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण के माध्यम से दलित, वंचित और मुस्लिम मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करने का आरोप लगाया है। हालांकि विपक्ष के पास संसद में संख्या नहीं है और यह पूर्व निर्धारित है कि महाभियोग प्रस्ताव विफल होगा। इस महाभियोग प्रस्ताव का अस्वीकार होना उनकी विजय के रूप में देखा जाएगा और गलत कार्यों से उन्हें मुक्त माना जाएगा। तथापि कुछ लोग विपक्ष की शिकायतों को उचित मानते हैं। निर्वाचन आयोग ने इस तरह कार्य किया कि उस पर राजनीतिक पक्षपात का आरोप लगाया गया। उसने विपक्ष के साथ समान व्यवहार नहीं किया और उनके निर्णयों से अधिकतर भाजपा को लाभ हुआ। इन सबके चलते कई बार एक तरह से नागरिकता का परीक्षण भी बना। इस मामले में उच्चतम न्यायालय ने हस्तक्षेप किया और निर्वाचन आयोग से कहा कि वह पारदर्शिता बरते। प. बंगाल में मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण में उच्चतम न्यायालय के हस्तक्षेप से ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस सरकार और निर्वाचन आयोग के बीच बढ़ते टकराव पर अंकुश लगा। मुख्यमंत्री ने अपना धरना तब समाप्त किया, जब न्यायालय ने मतदाता सूची से लोगों को शामिल न करने के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई के लिए अधिकरणों के गठन का आदेश दिया। विपक्ष जानता है कि उसके पास संख्या नहीं है किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसे संस्थागत रूप से जो गलत कार्य किए जा रहे हैं उनका पर्दाफाश करने के अपने लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। जब से मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण की प्रक्रिया शुरू हुई, विपक्ष बार-बार यह कह रहा है कि इसके कार्यान्वयन में गंभीर खामियां हैं। विपक्ष के व्यापक विरोध के बावजूद आयोग ने यह प्रक्रिया जारी रखी। अत निर्वाचन आयोग के विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव लाना उचित है। संसदीय विरोध को राजनीतिक बताना विरोध और विमत को अवैध बताने का प्रयास है। इसी तरह इस प्रस्ताव को अतिवादी कदम बताना विपक्ष को जिम्मेदारी के वैध अवसरों से वंचित रखना है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विपक्ष को स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या प्रतीकात्मक उद्देश्य से अंतिम विकल्प का इस्तेमाल करना उचित है, क्योंकि यह कदम राजनीतिक समस्या का समाधान नहीं है। ऐसा कर विपक्ष स्वयं की उपेक्षा कर रहा है और एक उच्च संवैधानिक प्राधिकारी के साथ टकराव को और बढ़ा रहा है। भाजपा का आरोप है कि यह कदम पूर्णत- राजनीतिक है और इसका उद्देश्य विशेषकर पश्चिम बंगाल में चुनावों से पूर्व दबाव डालना है। निर्वाचन आयोग के दुराचार के विरुद्ध कोई ठोस सबूत नहीं है। यह केवल दिखावे के लिए राजनीतिक नाटक और एक स्वतंत्र संवैधानिक पद का राजनीतिकरण है, जिसके चलते चुनावों में जनता का विश्वास कम हो सकता है। संविधान के अंतर्गत मुख्य निर्वाचन आयुक्त को हटाने के लिए दोनों सदनों का दो-तिहाई बहुमत होना चाहिए। दोनों सदनों में राजग की सदस्य संख्या को ध्यान में रखते हुए इस महाभियोग प्रस्ताव का गिरना निश्चित है। तथापि स्वतंत्र भारत में इतिहास में यह पहली बार है कि एक वर्तमान मुख्य निर्वाचन आयुक्त को हटाने के लिए महाभियोग प्रस्ताव की औपचारिक सूचना दी गई है। यह कदम संस्थागत सत्यनिष्ठा के मुद्दे पर सरकार को चुनौती देने का प्रयास है। यहां तक कि यदि प्रस्ताव गिर भी गया, फिर भी इसका निर्वाचन आयोग के लिए नैतिक और प्रतिष्ठा से जुड़ा महत्व होगा। संसदीय वाद विवाद, जांच और औपचारिक आरोपों से एक दस्तावेजी इतिहास बन जाता है और इससे पदधारक की दीर्घकालीन प्रतिष्ठा प्रभावित होती है। तथापि महाभियोग प्रस्ताव लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए गंभीर और दुश्चिंताजनक संकेत है। निर्वाचन आयोग के पद से स्वतंत्र और राजनीतिक रूप से तटस्थ रहने की अपेक्षा की जाती है। यदि महाभियोग प्रस्ताव का उद्देश्य राजनीतिक असहमति का प्रयास है तो इससे आयोग की स्वतंत्रता प्रभावित होगी। कुल मिलाकर महाभियोग प्रस्ताव किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, अपितु यह बताता है कि विपक्षी दलों और निर्वाचन आयोग में किस प्रकार विश्वास का अभाव है। दुखद तथ्य यह है कि हमारे नेतागण बुनियादी सिद्धांतों को नजरअंदाज करते हैं। यदि महाभियोग प्रस्ताव से मुख्य निर्वाचन आयोग को हटाने में वे विफल रहे तो यह विवाद और यह प्रक्रिया सुनिश्चित करेगी कि उसका आचरण स्थायी राजनीतिक और ऐतिहासिक छाप छोड़ेगा और संसद के ऐतिहासिक रिकॉर्ड का हिस्सा बना रहेगा। इससे लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता कमजोर होने का खतरा भी है क्योंकि जवाबदेही और संस्थागत स्थिरता दोनों के बीच संतुलन बनाया जाना चाहिए। विपक्ष को मुख्य निर्वाचन आयोग, राज्यपाल, न्यायालय आदि को राजनीतिक टकराव में घसीटने की बजाय सोच-विचार कर कदम उठाने चाहिए। अविश्वास प्रस्ताव और महाभियोग प्रस्ताव उस जिम्मेदारी से बचना और अपने उत्तरदायित्वों को छोड़ना है। हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली की आधारशिला स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव है। यदि चुनावों की विश्वसनीयता समाप्त होती है तो सरकार की वैधता भी कमजोर होती है।

भारत की संतुलित नीति

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के रास्ते 45 हजार मीट्रिक टन एलपीजी लेकर शिवालिक टैंकर के गुजरात के मुंद्रा तट पर पहुंचने से भारत को बड़ी राहत मिली है। शिवालिक के पीछे-पीछे नंदा देवी जहाज भी मंगलवार की शाम को पहुंच गया है। होर्मुज स्ट्रेट पर अब भी भारत के 22 जहाज फंसे हुए हैं और इन जहाजों में 611 भारतीय नाविक सवार हैं। इन जहाजों में 6 एलपीजी जहाज, एक में एलएनजी, चार कच्चे तेल के टैंकर और एक जहाज कैमिकल उत्पाद वाला शामिल है। भारत में खाना पकाने वाली रसोई गैस को लेकर पैदा हुआ पैनिक अब धीरे-धीरे खत्म हो रहा है। कमर्शियल गैस की सप्लाई भी शुरू की जा रही है और हालात सामान्य होने की ओर आग्रसर है। 28 फरवरी को अमेरिका और इजरायल ने मिलकर ईरान पर हमला कर दिया था। इसके बाद ईरान ने बदला लेते हुए होर्मुज स्ट्रेट को बंद कर दिया था। होर्मुज स्ट्रेट बंद होने के कारण भारत के कच्चे तेल और गैस की आपूर्ति पर असर पड़ा। क्योंकि भारत अपनी जरूरत का 80-90 फीसदी कच्चा तेल और 60 फीसदी एलपीजी आयात करता है। इसमें से 85-90 फीसदी एलपीजी सऊदी अरब और कुवैत जैसे खाड़ी देशों से आती है। होर्मुज स्ट्रेट में ईरान जहां जहाजों को गुजरने नहीं दे रहा है और उन पर हमला कर रहा है। ऐसी स्थिति में भारत के दो जहाजों को सुरक्षित रास्ता मिलना न सिर्फ बड़ी कूटनीतिक जीत है, बल्कि जहाजों में लदा माल भी अहम है, क्योंकि शिपिंग से जुड़ी दिक्कतों की वजह से एलपीजी की सप्लाई पर असर पड़ा था। ईरान और अमेरिका-इजरायल युद्ध के चलते एक हफ्ते तक भारत की खामोशी पर देश के भीतर विपक्ष द्वारा विदेश नीति पर बहुत से सवाल खड़े किए जा रहे थे लेकिन भारत ने बेहद संतुलित तटस्थ और कूटनीतिक रुख अपनाया। भारत ने युद्ध पर बहुत ही सतर्क प्रतिक्रिया दी। भारत ने सीधे तौर पर किसी का पक्ष लेने की बजाय शांति और कूटनीतिक संवाद की अपील की। एक ओर भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए ईरान के साथ संबंधों को बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहा तो दूसरी ओर अमेरिका के साथ व्यापारिक सौदों पर भी बातचीत कर रहा है। भारत की चिंता ईरान समेत सभी खाड़ी देशों में रोजी-रोटी कमा रहे लगभग एक करोड़ भारतीयों की सुरक्षा की भी रही। भारत का मुख्य उद्देश्य अपने भूराजनैतिक और आर्थिक हितों की रक्षा करना है। भारत ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया और तेहरान के साथसीधे संवाद को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा समर्थित सैन्य दृष्टिकोण के विकल्प के रूप में पेश किया। अब जबकि ट्रम्प को अपने ही मित्र देशों ने होर्मुज जलडमरूमध्य में अपने युद्धपोत भेजने से साफ इंकार कर दिया है और खाड़ी देश भी अब ईरान के विरुद्ध अपनी भूमि का इस्तेमाल होने देने से साफ इंकार कर रहे हैं तो भारत ने अपना कूटनीतिक दांव चल दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान और विदेश मंत्री अराघची से फोन पर बातचीत की। वहीं विदेश मंत्री एस. जयशंकर ईरान के विदेश मंत्री और अन्य अधिकारियों के साथ लगातार बातचीत करते रहे, जिसके सकारात्मक परिणाम निकले और ईरान ने तीन भारतीय ध्वज वाले गैस टैंकरों को जाने की अनुमति दे दी।

भारत अपने कच्चे तेल का लगभग 90 प्रतिशत आयात करता है और तरलीकृत पैट्रोलियम गैस का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आयातक है। भारत के लिए यह जरूरी था कि वह ईरान और अमेरिका के साथ अपने संबंधों को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करे। दिल्ली स्थित ईरान के राजदूत ने भी सकारात्मक संकेत दिए और कहा कि भारत ईरान का दोस्त है और मसले जल्द सुलझ जाएंगे। ईरान के विदेश मंत्री अराघची ने भी स्पष्ट संकेत दिये कि ईरान उन देशों के साथ बातचीत के लिए तैयार है जो अपने जहाजों के लिए सुरक्षित मार्ग चाहते हैं। भारत ने इस मौके का लाभ उठाने के लिए तुरन्त कदम बढ़ा दिये। जयशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि दोनों देशों के बीच यह व्यवस्था और संबंध रियायतों पर आधारित नहीं थे। उन्होंने कहा, यह आदान-प्रदान का मुद्दा नहीं है। भारत और ईरान के बीच संबंध है, और यही इतिहास वह आधार है जिस पर मैंने यह बातचीत शुरू की। हालांकि, सभी भारतीय जहाजों को कवर करने वाला कोई सर्वव्यापी समझौता नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक परागमन पर अलग-अलग बातचीत की जा रही है। जयशंकर ने कहा, जहाज की हर आवाजाही एक अलग घटना है और बताया कि कई भारतीय जहाज अभी भी इस क्षेत्र में मौजूद हैं और बातचीत जारी है। तेल की बढ़ती कीमतों और बाधित शिपिंग मार्गों ने पहले ही बाजारों को हिलाकर रख दिया है और आपूर्ति शृंखलाओं कोसंकट में डाल दिया है।हालांकि ऐसी मीडिया रिपोर्ट भी सामने आई है कि ईरान ने भारत द्वारा पकड़े गए तीन टैंकर वापिस मांगे हैं। जबकि भारत का कहना है कि पकड़े गए तेल टैंकरों का स्वामित्व ईरान के पास नहीं है। उम्मीद है कि यह मुद्दा भी बातचीत से हल हो जाएगा। महायुद्ध का संकट ब्रिक्स जैसे मंचों में भारत की कूटनीति की परीक्षा ले रहा है, जिसकी अध्यक्षता भारत इस वर्ष कर रहा है और ईरान भी इसके सदस्यों में से एक है। ईरान यह भी चाहता है कि ब्रिक्स अमेरिकी और इजराइली हमलों की निंदा करे। यह मामला इसलिए भी जटिल है क्योंकि ब्रिक्स के विस्तारित गुट में सऊदी अरब और यूएई भी शामिल हैं। भारत और ईरान के बीच ऐतिहासिक रूप से दोस्ताना और रणनीतिक संबंध रहे हैं। ईरान भारत के लिए महत्वपूर्ण ऊर्जा भागीदारी है और मध्यपूर्व से कनेक्टिविटी के लिए विशेषकर चाबहार बंदरगाह के माध्यम से दोनों देशों के हित समान हैं। अब जबकि अमेरिका ने चाबहार बंदरगाह पर भी हमले किए हैं और ट्रम्प के इरादे भारतीय हितों को आघात पहुंचाना है तो भारत काफी सतर्कता से काम कर रहा है। युद्ध के खतरों के बीच ईरान ने भारत के तेल टैंकरों को जाने की अनुमति देकर संबंधों का मार्ग प्रशस्त किया है।

सम्पादकीय...

ईद का त्योहार और हमारे तिवारी चाचा

ईद का त्योहार एकदम पास है और यह त्योहार इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण व बड़ा त्योहार है। इस दिन घर के सभी लोग चाहें वह देश के किसी कोने में जीविकोपार्जन हेतु रहते हों पर घर जरूर आ जाते हैं। ईद के दिन हम सब खुशी की मीठी सेवइयों की चाशनी में डूबकर हर एक को मीठी सेवइयां खिलाकर मोहब्बत का पैगाम देते हैं। इस दिन मीठी- मीठी सेवइयां तो बनती ही हैं और साथ मे दही बड़े, छोले, चटपटे चने, कचालू आदि भी खूब बनते हैं। हमारे पिताजी रेलवे में मुलाजिम थे और हम रेलवे कॉलोनी में रहा करते थे। बगल के क्वार्टर में रहते थे एक तिवारी चाचा जो भी रेलवे के कर्मचारी थे। ईद के दिन वे हमारी सेवइयों को परिवार के सहित खूब शौक से खाया करते थे। यों ही रमजान का महीना शुरू होता तो शाम अक्सर इफ्तार के वक्त उनके घर का हिस्सा उनके घर पहुंच जाता था। उनके बच्चे भी बहुत शौक से इफ्तार में बनी फुलकी, पकौड़ी, चाट, कचालू, फ्रूट चाट, शरबत, पापड़ खाते थे। मोहब्बत इतनी की अगर हम भूल गए तो जबरन किचन में पहुंच जाते और अपना हिस्सा लेकर ही मानते थे। होली में उनकी गुझिया, पापड़, पुआ आदि हमें खाने को मिलते थे। किस्म-किस्म की सेवइयां जैसे पतली वाली, किमामी व लच्छेदार, शीर खोरमा बनती और हमारे अजीज तिवारी चाचा भी खाते। यों ही हम नमाज़ अदा कर घर आते की अम्मा पहले ही कह उठतीं ये पकवान तिवारी चाचा को देकर आओ और फिर कुछ खाओ पियो। पहले ईद की ललक ऐसी होती की रमजान माह के शुरू होते ही ईद की चर्चा चौपालों व चौराहों पर होने लगती। हर एक धर्म के लोग इस पर बात करते और व्यापारी वर्ग भी इस आस में रहता कि इस ईद में हमें अच्छा मुनाफ़ा हो जाएगा। घर घर ईद की तैयारियां शुरू हो जाती और और हमारे पड़ोसी तिवारी चाचा बहुत ही खुश होते और बराबर ही तैयारियों का ज़ायज़ा हम लोगों से लेते रहते। हमारी तिवारी चाचा को सेवइयां भी बहुत पसंद थी।

> **पहले ईद की ललक ऐसी होती की रमजान माह के शुरू होते ही ईद की चर्चा चौपालों व चौराहों पर होने लगती। हर एक धर्म के लोग इस पर बात करते और व्यापारी वर्ग भी इस आस में रहता कि इस ईद में हमें अच्छा मुनाफ़ा हो जाएगा। घर घर ईद की तैयारियां शुरू हो जाती और और हमारे पड़ोसी तिवारी चाचा बहुत ही खुश होते और बराबर ही तैयारियों का ज़ायज़ा हम लोगों से लेते रहते। हमारी तिवारी चाचा को सेवइयां भी बहुत पसंद थी।**

ईसाई बन रहे सिख, लोगों को बरगला रहीं मिशनरियां

हाल ही में, मैं पंजाब में बदलते घटनाक्रमों से संबंधित समाचार देख रहा था। अचानक, मैं कुछ मीडिया हाउसों द्वारा सिख-सामाजिक स्तरीकरण को वर्णित करने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे नए शब्दों से आकर्षित हुआ। नया शब्द जो चर्चा में था वह था 'दलित-सिख'। यह मुझे चकित कर गया क्योंकि हमारे भारत में जिन सिख गुरुओं को हम अपने पूजनीय गुरु मानते हैं, उनकी शिक्षाओं के अनुसार सिख धर्म जाति व्यवस्था या किसी भी सामाजिक असमानता को न तो मानता है और न ही उसका पालन करता है। दिलचस्प बात यह है कि सिख धर्म की स्थापना का मूल आधार ही सामाजिक समानता, समतावाद और भेदभाव का विरोध था। तो फिर दलित-सिख कौन है इस शब्द का क्या अर्थ है पंजाब भारत का एकमात्र सिख-बहुल राय है। हाल के वर्षों में विशेष रूप से पिछले एक दशक में सिख धर्म एक संकट का सामना कर रहा है। यह संकट सिख धर्म की स्थापना के बाद से अब तक का सबसे गंभीर संकट है। सिखी, जो समानता और खालसा (पवित्रता) का प्रतीक है, खतरे में है। इस समय सिखी को दो प्रकार के खतरे हैं। ये दोनों खतरे आपस में जुड़े हुए हैं और उन मूल्यों के क्षरण के कारण उत्पन हो रहे हैं जिनके लिए सिख धर्म की स्थापना हुई थी और जिनके लिए वह खड़ा रहा। यदि हम बाहरी खतरे का विश्लेषण करें तो हमें भीतर के खतरे की स्पष्ट समझ मिल जाएगी जो बाहरी खतरे को जन्म दे रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार सिख धर्म का पालन 1.6 करोड़ लोग करते हैं जो पंजाब की कुल आबादी का 57.69% है। पंजाब के जिलों में तरनतारन में सिख आबादी का प्रतिशत सबसे अधिक 93.33% है, इसके बाद मोगा (82.24%) और बरनाला (78.54%) है। 2001 की जनगणना के अनुसार पंजाब की आबादी में सिखों की हिस्सेदारी 59.9% थी जबकि ईसाइयों की संख्या मात्र 1.2% थी। 2011 तक सिख आबादी में उल्लेखनीय गिरावट आकर यह 57.69% रह गई, जबकि ईसाई धर्म मानने वालों का अनुपात बढ़कर 1.26% हो गया।जब मैंने आंकड़ों और तथ्यों की और गहराई से जांच की तो पंजाब राय के धार्मिक-जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल में हाल के बदलाव को देखकर मैं विचलित हो गया, जिसमें राय में ईसाइयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ईसाई मिशनरियों के मुख्य लक्ष्य सिख समाज के निचले वर्ग और स्तर से जुड़े लोग तथा दलित-सिख है। पंजाब में ईसाई धर्म के इतिहास का पता लगाने पर कई समकालीन इतिहासकारों का मत है कि 18वीं से 20वीं सदी के दौरान पंजाब में ईसाई मिशनरी बहुत अधिक लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने में सफल नहीं हो सके, क्योंकि पंजाब बहुत देर से ब्रिटिश साम्राज्य के दायरे में आया था जिससे इस कार्य को सुगमता मिलती। लगभग दो दशक पहले तक पंजाब में ईसाई समुदाय मुख्यतः हिंदू समुदाय कन्वर्ट हुए लोगों का था। लेकिन हाल के समय में एक नया और स्पष्ट प्रवाह दिखाई दे रहा है, जिसमें विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के सिख समाज के निचले वर्गों का बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म में सामूहिक धर्मांतरण हो रहा है। हजारों लोगों ने अपनी पुरानी आस्था सिख धर्म को छोड़कर ईसाई धर्म अपना लिया है। इतना ही नहीं इस सीमावर्ती राय की जनसांख्यिकी बहुत तेजी से बदल रही है। इस तीव्र और संभवतः अपरिवर्तनीय कन्वर्जन का मुख्य और सबसे प्रमुख कारण सिख धर्म के भीतर प्रचलित जाति आधारित असमानताएं है। सिख गुरुओं ने एक ऐसे जातिविहीन समाज की बात की थी जहां सभी को समान रूप से माना जाए और जाति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। इसका उदाहरण लंगर (सामुदायिक रसोई) और गुरुद्वारा की परंपरा से देखा जा सकता है, जो सभी के लिए खुले हैं। पवित्र हरमंदिर साहिब के चार द्वार इस दर्शन का प्रतीक है कि यह चारों वर्णों के लिए खुला है।लेकिन वास्तविकता इससे बहुत अलग है। दलित सिख भेदभाव का शिकार हैं। पंजाब के लगभग हर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में इन सामाजिक जातियों के लिए अलग गुरुद्वारे और अलग श्मशान स्थल हैं। वर्तमान समय के सिख सामुदायिक नेता, सामाजिक प्रभावक और धार्मिक उपदेशक, गुरुओं द्वारा कल्पित ऐसे समाज को बढ़ावा देने और विकसित करने में असफल रहे हैं। जबकि ये जाति आधारित भेदभाव व्यापक रूप से जारी है, सिख बुद्धिजीवी और नेता अपनी राजनीतिक और भौतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में व्यस्त हैं।

निम्न जाति के सिखों के मोहभंग का एक और कारण यह है कि उनके अलगाव को दूर करने के लिए कोई धार्मिक या सामाजिक व्यवस्था नहीं है। वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से निचले स्तर पर हैं। यदि उनमें से कुछ लोग आर्थिक रूप से ऊपर उठ भी जाते हैं, तो भी उन्हें सिख समाज के उच्च जाति समूहों से सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती। इसलिए वे मिशनरियों द्वारा फैलाए गए कन्वर्जन के जाल में आसानी से फंस जाते हैं।पंजाब में सिखों के इस चिंताजनक धर्मांतरण का एक अन्य प्रमुख कारण सिख धार्मिक-सामाजिक संस्थानों के स्तर और प्रतिष्ठा में आई गिरावट है। इस दिशा में नेतृत्व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को करना था, जिसे सिख धर्म की सर्वोच्च धार्मिक-प्रशासनिक संस्था माना जाता है। एसजीपीसी ने धार्मिक सिद्धांतों के प्रसार पर भी अपना ध्यान खो दिया है और अपने मूल कार्यक्षेत्र से भटक गई है। एसजीपीसी के कुल बजट का बहुत ही कम हिस्सा सिख धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों के प्रसार पर खर्च किया जाता है, जो कि उसका मुख्य कार्य है। एक अन्य कारण यह है कि सिख बुद्धिजीवियों और अनुयायियों के मन में यह गलत धारणा बैठ गई है कि सिख धर्म के अस्तित्व के लिए हिंदू धर्म खतरा है, जबकि वास्तविक खतरा यह धर्मांतरण है। वास्तव में हिंदू और सिख दोनों के सामने एक समान खतरा है। इसलिए मुख्य कारण पर प्रहार करने के बजाय ध्यान भटकाने के लिए इस कारण का बहाना बनाया जाता है।इन चिंताजनक धर्मांतरणों का एक अन्य कारण ईसाई मिशनरियों का उत्साह है। वे अपने प्रभाव को फैलाने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हैं। इन भोले-भाले लेकिन अलग-थलग पड़े लोगों को आकर्षित करने का एक तरीका यह है कि उन्हें यह वादा किया जाता है कि ईसाई बनने से उन्हें कनाडा, इंग्लैंड और अमेरिका का वीजा मिल सकता है। वे अशिक्षित और दिव्यांग लोगों को यह विश्वास दिलाकर बपतिस्मा दिलाते हैं कि ईश्वर उनकी पीड़ा और कष्ट दूर कर देगा। दूसरा तरीका यह है कि उन्हें विभिन्न प्रकार के लाभ दिए जाते हैं जैसे मिशनरी अस्पतालों में मुफ्त चिकित्सा सुविधा, मुफ्त शिक्षा, पुरानी बीमारियों का उपचार और अन्य आर्थिक लाभ आदि। पूरे राय में, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, हर जगह चर्च बनाए जा रहे हैं। उन्हें गुरुद्वारों के आकार के अनुरूप बनाया जाता है और ईसाई भजन कीर्तन (पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब के संगीतमय पाठ) के रूप में गाए जाते हैं। इतना ही नहीं, 21 नवंबर 2019 को लुधियाना के सर्किट हाउस में पंजाब के पादरी संघों की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि राय में ईसाइयों के हितों के लिए एक सर्वोच्च संस्था 'शिरोमणि चर्च प्रबंधक कमेटी (एससीपीसी)' बनाई जाएगी। पंजाब एक सीमावर्ती राय है और सिख धर्म की जन्मभूमि भी है। यहां के धार्मिक-जनसांख्यिकीय स्वरूप पर कोई भी खतरा भारत की सुरक्षा पर दूरगामी प्रभाव डाल सकता है। सिख धार्मिक नेताओं को इस संकट को पहचानना और स्वीकार करना चाहिए तथा इसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए कार्य करना चाहिए।

> **दिलचस्प बात यह है कि सिख धर्म की स्थापना का मूल आधार ही सामाजिक समानता, समतावाद और भेदभाव का विरोध था। तो फिर दलित-सिख कौन है इस शब्द का क्या अर्थ है पंजाब भारत का एकमात्र सिख-बहुल राय है। हाल के वर्षों में विशेष रूप से पिछले एक दशक में सिख धर्म एक संकट का सामना कर रहा है। यह संकट सिख धर्म की स्थापना के बाद से अब तक का सबसे गंभीर संकट है। सिखी, जो समानता और खालसा (पवित्रता) का प्रतीक है, खतरे में है। इस समय सिखी को दो प्रकार के खतरे हैं। ये दोनों खतरे आपस में जुड़े हुए हैं और उन मूल्यों के क्षरण के कारण उत्पन हो रहे हैं जिनके लिए सिख धर्म की स्थापना हुई थी और जिनके लिए वह खड़ा रहा। यदि हम बाहरी खतरे का विश्लेषण करें तो हमें भीतर के खतरे की स्पष्ट समझ मिल जाएगी जो बाहरी खतरे को जन्म दे रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार सिख धर्म का पालन 1.6 करोड़ लोग करते हैं जो पंजाब की कुल आबादी का 57.69% हैं। पंजाब के जिलों में तरनतारन में सिख आबादी का प्रतिशत सबसे अधिक 93.33% है, इसके बाद मोगा (82.24%) और बरनाला (78.54%) हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार पंजाब की आबादी में सिखों की हिस्सेदारी 59.9% थी जबकि ईसाइयों की संख्या मात्र 1.2% थी। 2011 तक सिख आबादी में उल्लेखनीय गिरावट आकर यह 57.69% रह गई, जबकि ईसाई धर्म मानने वालों का अनुपात बढ़कर 1.26% हो गया।जब मैंने आंकड़ों और तथ्यों की और गहराई से जांच की तो पंजाब राय के धार्मिक-जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल में हाल के बदलाव को देखकर मैं विचलित हो गया, जिसमें राय में ईसाइयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ईसाई मिशनरियों के मुख्य लक्ष्य सिख समाज के निचले वर्ग और स्तर से जुड़े लोग तथा दलित-सिख हैं।**

वैश्विक दबंगई देखने को लाचार संयुक्त राष्ट्र

उमेश चतुर्वेदी ।

ईरान के खिलाफ अमेरिकी-इजरायली कार्रवाई के बाद एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और औचित्य दोनों पर सवाल उठा है। दिलचस्प यह है कि अमेरिका ने अतीत में जब भी ऐसी कार्रवाई की, उसने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों को लागू करने का बहाना बनाया। चूंकि मौजूदा अमेरिकी राष्ट्र डोनाल्ड ट्रंप अलबेले राजनेता हैं, उनके लिए नियम-कायदों और जगतगति से ज्यादा उनकी अपनी जुबान और सोच मायने रखत हैं। इसलिए ईरान के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ की ओट लेने की औपचारिकता भी नहीं निभाई। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का सबसे बड़ा कारण प्रथम विश्व युद्ध के बाद गठित लीग ऑफ नेशन्स की असफलता रही। अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन की पहल पर प्रथम विश्व युद्ध के बाद 10 जनवरी 1920 को स्थापित लीग ऑफ नेशन्स पहला ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन था, जिसका मुख्य उद्देश्य कूटनीति और सामूहिक सुरक्षा के जरिए विश्व शांति बनाए रखना था। लीग ऑफ नेशन्स का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रों के बीच के विवादों को सुलझाना, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना और वैश्विक स्तर पर निरस्त्रीकरण को अमली-जामा पहनाना रहा। लेकिन जिनेवा में स्थित वह संस्था ऐसा करने में पूरी तरह नाकाम रही। उसकी नाकामी के चलते जर्मनी और जापान ने विस्तारवादी नीतियां ना सिर्फ अपनाईं, बल्कि रोजाना नए-नए राष्ट्रों पर कब्जा और हमला करने लगे। इसके बाद जो हुआ, वह विश्व इतिहास के काले पन्नों में दर्ज है। बेशक लीग ऑफ नेशन्स को 20 अप्रैल 1946 को आधिकारिक रूप से भंग किया गया, लेकिन इसके पहले ही 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र की स्थापना कर दी गई। इसकी स्थापना के लिए बड़ा आधार जापान पर हुए अमेरिकी अणुबम हमले के बाद उपजी मानवीय त्रासदी रही। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसे भी पढ़ें- सुनो इ ये तरीका बदल लो...ईरान पर भारत ने गजब ही रुख दिखाया, 193 देश हैरान संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाना और विश्व में शांति और सुरक्षा बनाए रखना था। लेकिन सवाल यह है कि क्या वह अपने इस प्राथमिक उद्देश्य में सफल है इस पर चर्चा से पहले संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर ध्यान देना जरूरी है, जिसके अनुसार संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य, दुनिया भर में शांति बनाए रखना और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान करना है। इसके साथ ही उसका एक और मकसद, राष्ट्रों के बीच समानता और आत्म-निर्णय के सिद्धांतों के आधार पर दोस्ताना संबंधों का विकास करना भी रहा है। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में साफ लिखा है कि यह अंतरराष्ट्रीय संगठन बिना किसी जाति, लिंग, भाषा या धर्म के भेदभाव के पूरी दुनिया के मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देगा। उसका मकसद, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को हल करने के लिए राष्ट्रों के बीच सहयोग स्थापित करने के साथ ही, गरीबी दूर करने, भूख, बीमारी और निरक्षरता से लड़ने और प्राकृतिक आपदाओं के समय सहायता प्रदान करने के लिए कार्य करना भी है। इसके साथ ही उसकी भूमिका अंतरराष्ट्रीय संधियों और कानूनों के प्रति सम्मान बनाए रखने के लिए प्रयास करने की भी है। कह सकते हैं कि संयुक्त राष्ट्र की भूमिका ऐसे समन्वय केंद्र के रूप में कार्य करने की सोची गई, जिसके मंच पर विश्व के सभी राष्ट्र उसके साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम कर सकें। लेकिन सवाल यह है कि क्या संयुक्त राष्ट्र संघ ऐसा कर सका है निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है।

मौजूदा वैश्विक परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र की हालत सड़क के किनारे बैठे उस असहाय व्यक्ति जैसी हो गई है, जो सड़क पर जारी मारपीट को असहाय भाव से टुकुर-टुकुर देखने को मजबूर रहता है। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का सबसे प्रमुख उद्देश्य युद्धों को रोकना है। लेकिन ना तो यह शीत युद्ध को रोक सका, ना ही मौजूदा दौर के संघर्षों को रोक पा रहा है। 1991 के खाड़ी युद्ध के लिए तो अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जार्ज बुश ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव को ही बहाना बनाया था। 2001 में भी जार्ज बुश के बेटे जूनियर जार्ज बुश और तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने भी इराक और अफगानिस्तान पर हमले के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों और उसकी सेना की ओट ली थी। 1994 का रवांडा का नरसंहार हो या फिर 2011 में दक्षिण सूडान में हुआ गृहयुद्ध, 1995 में सर्ब सेना द्वारा बोस्निया में किया गया नरसंहार हो या फिर 2010 के दौरान हुई कथित अरब क्रांति की आड़ में हुई मध्य एशिया की हिंसा, किसी को भी रोकने में संयुक्त राष्ट्र अभियान सफल नहीं रहे। संयुक्त राष्ट्र का मंच राष्ट्रों के बीच संवाद बढ़ाने और विवादों को सुलझाने के बजाय,उनके बीच गाली-गलौज और आपसी आलोचना का केंद्रभर बनकर रह गया है। अभी संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख और ताकतवर अंग सुरक्षा परिषद है। इसका गठन ही गैरबराबरी को बढ़ावा देने का बड़ा आधार बन गया है। इसमें तीन राष्ट्र ऐसे हैं, जो अक्सर अपने वीटो पॉवर का इस्तेमाल नकारात्मक तरीके से करते हैं। अमेरिका, चीन और रूस की ज्यादातर भूमिका नकारात्मक रहती है। रही बात ब्रिटेन और फ्रांस की तो उनकी भूमिका मध्यमार्गी है। हालांकि वे भी महत्वपूर्ण मसलों में सीधे हस्तक्षेप करने की भूमिका को प्रभावी ढंग से निभा नहीं सकते। इसका ही असर है कि ईरान पर इजरायल और अमेरिका ने हमला कर रखा है और रूस एवं यूक्रेन के बीच चार साल से युद्ध जारी है। मानवाधिकार के मुद्दों पर भी संयुक्त राष्ट्र प्रभावी नजर नहीं आता। कोविड महामारी के दौरान जिस तरह विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तीसरी दुनिया के कमजोर देशों के साथ पक्षपात पूर्ण भूमिका निभाई, वह भी संयुक्त राष्ट्र की नाकामी प्रतीक है। जब से ट्रंप ने अमेरिका की दोबारा कमान संभाली है, तब से उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को और ज्यादा पंगु करने की कोशिश की है। विश्व स्वास्थ्य संगठन समेत संयुक्त राष्ट्र के कई अंगों में अपनी आर्थिक भागीदारी और सहयोग उन्होंने घटाना शुरू कर दिया है। उनका मानना है कि संयुक्त राष्ट्र के मंचों के जरिए अमेरिकी करदाताओं की बड़ी रकम बेकार के कामों में खर्च हो रही है, जिसका अमेरिका को सीधे फायदा नहीं मिलना है। ऐसे में आने वाले दिनों में संयुक्त राष्ट्र की स्थिति और भी ज्यादा निरीह होने वाली है। ऐसे में अगर दुनिया के देश संयुक्त राष्ट्र के औचित्य पर ही सवाल उठाने लगें तो दुनिया को हैरत नहीं होनी चाहिए।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने कदम ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साउथ पोचनपुर एक्स., दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2011/39862)

नवसंवत्सर 2083 व वासंतिक नवरात्र आज से, घर-घर होगी मां भगवती की आराधना

कुशीनगर। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ गुरुवार से 'रौद्र' नामक नवसंवत्सर 2083 एवं वासंतिक नवरात्र का शुभारम्भ हो रहा है। जिले भर में श्रद्धालु विधि-विधान से मां भगवती की पूजा-अर्चना कर नववर्ष का स्वागत करेंगे।

मंदिरों और घरों में विशेष तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। महर्षि पाराशर योतिष संस्थान ट्रस्ट के योतिषाचार्य पं. राकेश पाण्डेय के अनुसार इस वर्ष नवसंवत्सर का आरम्भ गुरुवार को होने से वर्ष के राजा बृहस्पति (गुरु) और मंत्री मंगल माने गए हैं, जो धार्मिक आस्था और सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि के संकेत देते हैं। प्रतिपदा तिथि प्रातः 06:40 बजे से प्रारम्भ होकर पूरे दिन रहेगी, ऐसे में कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त सूर्योदय के बाद से सूर्यास्त तक रहेगा। अभिजित मुहूर्त 11:36 से 12:24 बजे तक निर्धारित है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष नवरात्र 19 मार्च से शुरू होकर 27 मार्च को नवमी तिथि तक चलेगा। योतिषीय गणना के अनुसार वर्ष का आरम्भ उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र और मीन लग्न में हो रहा है, जिससे धर्म, संस्कृति, शिक्षा और व्यापार के क्षेत्र में उन्नति के संकेत हैं। योतिषाचार्य के मुताबिक इस वर्ष धार्मिक आयोजनों में बढ़ोतरी होगी और समाज में आध्यात्मिक वातावरण सुदृढ़ होगा। व्यापारिक वर्ग के लिए वर्ष लाभकारी रहने की संभावना है, वहीं कला, संगीत और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति के योग बन रहे हैं। हालांकि प्राकृतिक आपदाओं और कुछ स्थानों पर तनाव की आशंका को देखते हुए सतर्कता बरतने की सलाह दी गई है। श्रद्धालुओं को नवरात्र में विधिपूर्वक कलश स्थापना कर मां दुर्गा की आराधना, दुर्गा सप्तशती का पाठ और नवार्ण मंत्र का जप करने की सलाह दी गई है। घरों को सजाकर और पूजा-पाठ के साथ नवसंवत्सर का स्वागत करने की अपील की गई है। जिले में नवरात्र को लेकर उत्साह का माहौल है और बाजारों में भी पूजा सामग्री की खरीदारी तेज हो गई है।

ढाई साल का रिपोर्ट कार्ड विकास की रफ्तार तेज, 'क्लीन-ग्रीन पडरौना' लक्ष्य -विनय जायसवाल

पडरौना।

नगरपालिका अध्यक्ष विनय जायसवाल ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर अपने दूसरे कार्यकाल के ढाई वर्ष पूरे होने पर उपलब्धियों और आगामी योजनाओं का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि योगी आदित्यनाथ और अरविंद कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में पडरौना नगर निरंतर विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है और प्रदेश स्तर पर अपनी अलग पहचान बना रहा है। उन्होंने बताया कि शहर में नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की गई हैं। रात में फंसे यात्रियों की मदद के लिए पथिक वाहन तथा बीमारों के लिए एम्बुलेंस सेवा संचालित की जा रही है। साफ-सफाई व्यवस्था को मजबूत करते हुए प्रमुख चौराहों का नामकरण महापुरुषों के नाम पर किया गया है और उनकी प्रतिमाओं की नियमित देखभाल सुनिश्चित की गई है। नगरपालिका भवन के ऊपरी तल पर स्थापित वातानुकूलित लाइब्रेरी छात्रों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। यहां अध्ययन करने वाले 26 छात्र-छात्राओं ने नीट, यूपी पुलिस समेत विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हासिल की है। इसके अलावा 110 कुओं का जीर्णोद्धार, 10 मंदिरों का पुनरुद्धार और 48 मंदिरों का रंग-रोगन कराया गया है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निशुल्क सिलाई-कढ़ाई केंद्र भी संचालित किया जा रहा है। अध्यक्ष ने बताया कि कल्याण मंडपम का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और जल्द ही इसे नगरपालिका को हैंडओवर किया जाएगा। आगामी योजनाओं के तहत सुराजी पोखरा के दूसरे चरण का टेंडर पूरा हो चुका है, जिसे लगभग 1.80 करोड़ रुपये की लागत से रिवर फ्रंट की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। शिवम पोखरा पर 1.44 करोड़ रुपये खर्च होंगे, जबकि कांटी, अहिरौली दीक्षित और अंबे चौक सहित आठ पोखरों का सुंदरीकरण कर व्यवस्थित छठ घाट बनाए जाएंगे। कठकुइयां मोड़ स्थित आंबेडकर पार्क के सुंदरीकरण पर 66 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे, जहां शेड, वाचनालय और अन्य सुविधाएं विकसित होंगी। उन्होंने बताया कि पालिका क्षेत्र में 25 नई सड़कों का निर्माण शीघ्र शुरू होगा और कूड़ा निस्तारण के लिए सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट भी प्रारंभ होने जा रहा है। शहर में स्ट्रीट लाइट व्यवस्था को और बेहतर करते हुए सुभाष चौक से दमवतिया, कठकुइयां मोड़ से परसौनी नहर पुल और राज दरबार से धोबहा पुल तक लाइटें लगाई जाएंगी। साथ ही सुभाष चौक पर वातानुकूलित ग्रीन शौचालय का निर्माण जल्द शुरू होगा। यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए नहर पटरी पर वेंडर जोन विकसित किया जाएगा। इसके अलावा 132 करोड़ रुपये की लागत से 365 किमी पाइपलाइन बिछाने का कार्य जल निगम द्वारा तेजी से कराया जा रहा है, जिससे 26 हजार परिवारों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा और हर घर नल योजना के तहत निशुल्क कनेक्शन दिए जाएंगे। अध्यक्ष ने कहा कि क्लीन पडरौना-ग्रीन पडरौना उनका मुख्य लक्ष्य है और इसके लिए नगरपालिका लगातार प्रयासरत है।

भटनी नगर पंचायत में तीन सभासदों का मनोनयन घोषित

दीपक वर्मा

अशोक गुप्ता

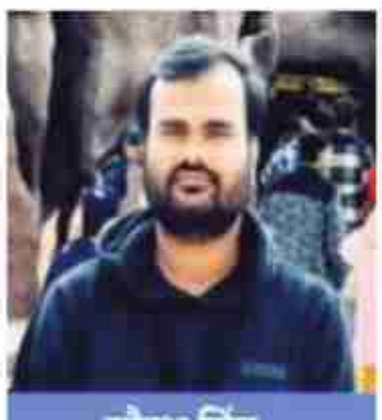

सौरभ सिंह

भटनी देवरिया।

दीपक वर्मा, अशोक गुप्ता व सौरभ सिंह को मिली जिम्मेदारी
अध्यक्ष विजय कुमार गुप्ता उर्फ मुन्ना ने दी बधाई

भटनी नगर पंचायत में तीन सभासदों के मनोनयन की घोषणा के साथ ही स्थानीय राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। पार्टी नेतृत्व द्वारा जारी सूची के अनुसार नगर पंचायत में तीन नए सभासदों को मनोनीत किया गया है।

घोषणा के अनुसार वार्ड संख्या 9 के हरिकीर्तन मोहल्ला निवासी दीपक वर्मा, वार्ड संख्या 9 के ही निवासी अशोक कुमार गुप्ता उर्फ भोला तथा वार्ड संख्या 7 के रामपुर खुरहुरिया निवासी सौरभ सिंह को सभासद के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई है। इन तीनों नामों के सामने आने के बाद कार्यकर्ताओं और समर्थकों में उत्साह का माहौल देखा जा रहा है। स्थानीय स्तर पर इसे संगठन को मजबूत करने और नगर पंचायत में बेहतर प्रतिनिधित्व देने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। नव मनोनीत सभासदों ने कहा कि वे जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने नगर में साफ-सफाई, जल निकासी, सड़क व्यवस्था और अन्य मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने का भरोसा दिलाया। नगर पंचायत अध्यक्ष विजय कुमार गुप्ता उर्फ मुन्ना ने तीनों सभासदों को बधाई देते हुए कहा कि उनके जुड़ने से नगर पंचायत को नई मजबूती मिलेगी और विकास कार्यों में तेजी आएगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी मिलकर नगर के हित में कार्य करेंगे।

स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

गोरखपुर, बेलघाट।

पंडित रामनयन रामसुख डिग्री कॉलेज, सोहनाग-बेलघाट, गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना (रासेयो) के विशेष शिविर के चौथे दिन स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने पोस्टरों के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और आत्मनिर्भर भारत के महत्व को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने यह संदेश दिया कि देश की आर्थिक प्रगति और समृद्धि के लिए स्वदेशी उत्पादों को अपनाना तथा स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

पोस्टरों में वोकल फॉर लोकल, मेड इन इंडिया और स्वदेशी अपनाओ, देश को मजबूत बनाओ जैसे प्रेरक संदेश रचनात्मक रूप में प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ईश्वरचंद पाण्डेय ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य तभी साकार हो सकता है जब हम सभी स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता दें और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा दें। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा वर्ग देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कार्यक्रम अधिकारी श्री राकेश पाण्डेय ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में देशभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी और रचनात्मकता का विकास करते हैं। पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से स्वयंसेवकों ने समाज को स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का सशक्त संदेश दिया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकगण श्री संजय नारायण पांडेय, श्री लाल जी यादव, डॉ. अशोक कुमार यादव, श्री त्रिभुवन पाण्डेय, श्रीमती कीर्ति त्रिपाठी सहित रासेयो के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

अवैध खनन बना जानलेवा- ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से युवक की मौत

नेबुआ नौरंगिया (कुशीनगर)। जटहा बाजार क्षेत्र में जारी अवैध मिट्टी खनन एक बार फिर जानलेवा साबित हुआ। मंगलवार की देर रात मिट्टी लादकर जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई, जिससे 22 वर्षीय युवक की दबकर मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार नाहरछपरा निवासी अमरजीत पुत्र त्रिवेनी मुसहर रात करीब 11 बजे पड़रौना-मंसाछापर मार्ग स्थित एक पेट्रोल पंप के पास खनन की गई मिट्टी ट्रैक्टर-ट्रॉली से गिराने जा रहा था। इसी दौरान अंधेरा और तेज रफ्तार हादसे का कारण बन गए। ट्रैक्टर अचानक संतुलन खो बैठा और पलट गया, जिसके नीचे दबकर अमरजीत की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक रात के समय अवैध खनन और मिट्टी ढुलाई के कारण इस मार्ग पर भारी वाहनों की लगातार आवाजाही रहती है। पर्याप्त रोशनी और सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में यहां दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है।

स्टेशन रोड पर अतिक्रमण पर चला अभियान- जेसीबी से उखाड़े गए अवैध चबूतरे, कई दुकानदारों पर कटा चालान

देवरिया।

मछली मार्केट से लेकर ब्रिज के नीचे सब्जी मंडी तक चला अभियान, कार्रवाई की भनक लगते ही कई दुकानें रहीं बंद

शहर में बढ़ते अवैध अतिक्रमण के खिलाफ नगर पालिका परिषद ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई की। ईओ संजय कुमार तिवारी के नेतृत्व में पालिका की टीम ने कोतवाली पुलिस के साथ जेसीबी मशीन लेकर रेलवे स्टेशन रोड से मछली मार्केट होते हुए ब्रिज के नीचे सब्जी मंडी तक अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। अभियान के दौरान टीम ने स्टेशन रोड पर दुकानों के बाहर अवैध रूप से किए गए अतिक्रमण को जेसीबी की मदद से हटवाया। कई दुकानदारों पर अतिक्रमण का चालान भी काटा गया। इसके बाद टीम मछली मार्केट पहुंची, जहां मीट और मछली की दुकानों के सामने बनाए गए अवैध चबूतरे को जेसीबी से तोड़ा गया। दिलचस्प बात यह रही कि पालिका की इस कार्रवाई की भनक पहले ही लग जाने के कारण स्टेशन रोड पर चिकन और मछली की लगभग सभी दुकानें बंद मिलीं। दुकानदार कार्रवाई के डर से अपनी दुकानें बंद करके गायब हो गए। हालांकि पालिका की टीम ने बंद दुकानों के बाहर भी जहां अतिक्रमण था, उसे हटाने का काम जारी रखा। कार्रवाई के दौरान ईओ संजय कुमार तिवारी ने दुकानदारों को साफ चेतावनी दी कि दुकान के बाहर किसी भी तरह का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अभियान लगातार जारी रहेगा और जो भी दुकानदार दोबारा अतिक्रमण करता पाया गया, उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस अभियान से स्टेशन रोड और आसपास के इलाके में प्रशासन का खौफ देखने को मिला। आम लोगों ने इस कार्रवाई का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि अब शहर की सड़कें अतिक्रमण मुक्त होंगी और आवागमन में सुविधा होगी।

केआईपीएस से नवोदय में तीन बच्चों का चयन, क्षेत्र में खुशी की लहर

नेबुआ नौरंगिया, कुशीनगर। नेबुआ नौरंगिया क्षेत्र के लक्ष्मीपुर में स्थित कुशीनगर इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल ने एक बार फिर अपनी उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था का परिचय दिया है। इस वर्ष विद्यालय के तीन मेधावी बच्चों क्रमशः नेबुआ राय गंज निवासी दिव्यांश पुत्र महेशचंद गुप्त, परसौनी निवासी अभय कुमार पुत्र दिलीप कुमार और नौरंगिया गांव निवासी विजय लक्ष्मी पुत्री रजनीश कुमार का चयन नवोदय विद्यालय में हुआ है, जिससे विद्यालय सहित पूरे क्षेत्र में खुशी का माहौल है। वर्ष 2017 से संचालित इस विद्यालय ने कम समय में ही उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। अब तक यहां से 20 से अधिक बच्चों का चयन नवोदय विद्यालय में तथा 10 से अधिक बच्चों का चयन सैनिक विद्यालय में हो चुका है। यह उपलब्धि विद्यालय की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समर्पित शिक्षकों और विद्यार्थियों की मेहनत का परिणाम है। बच्चों की इस सफलता से उनके परिवारजनों में खुशी का माहौल है। साथ ही क्षेत्रीय लोग भी विद्यालय की सराहना कर रहे हैं। विद्यालय प्रबंधक आशीष गुप्ता और प्रधानाचार्य शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि यदि सही मार्गदर्शन और संसाधन मिलें, तो गांव के बच्चे भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकते हैं।

30 मिनट की देरी, मशीनों ने भी नहीं दिया साथ, दमकल की लापरवाही न होती तो बच सकती थीं नौ जिंदगियां

नई दिल्ली। देश की राजधानी में भीषण अग्निकांड हुआ। दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के पालम क्षेत्र में बुधवार सुबह एक बहुमंजिला आवासीय इमारत में आग लगने से एक परिवार के नौ सदस्यों की मौत हो गई। जिनमें तीन बच्चे शामिल हैं। तीन अन्य घायल हुए हैं, जिनमें से दो ने आग से बचने के लिए राम चौक मार्केट, पलम मेट्रो स्टेशन के पास इमारत से कूदने का प्रयास किया था। पांच मंजिला इमारत में ग्राउंड और पहली मंजिल पर कपड़ा और कॉस्मेटिक शोरूम था, जबकि शोरूम के मालिक राजेन्द्र कश्यप का परिवार दूसरी और तीसरी मंजिल पर रहता था। आग लगने की सूचना सुबह 7:04 बजे पलम गांव थाने को मिली, जिसके बाद मौके पर राहत और बचाव टीम भेजी गई। इमारत से बचाए गए लोगों में से नौ को अस्पताल में मृत घोषित किया गया। मृतकों में प्रवेश (33), कमल (39), आशु (35), लाडो (70), हिमांशी (22), दीपिका (28) और तीन लड़कियां (15 और 6 वर्ष) शामिल हैं। अनिल (32) और एक दो वर्षीय बच्ची का इलाज चल रहा है, जबकि सचिन (29) को सफदरजंग अस्पताल में 25 प्रतिशत जलन के साथ इलाज किया जा रहा है। करीब 30 फायर टेंडर और 11 एम्बुलेंस के साथ पुलिस, BSES, एयर फोर्स पुलिस और NDRF के कर्मियों को राहत और बचाव अभियान में लगाया गया। मौके से मिली वीडियो फुटेज में इमारत से धुएं के मोटे बादल उठते और आग की लपटें दिखाई दे रही थीं, जबकि दमकलकर्मी संकरी गलियों और धुएं से भरे इंटीरियर्स में प्रवेश कर लोगों को सुरक्षित निकालने का प्रयास कर रहे थे। अधिकारियों ने कहा कि आग को काबू में कर लिया गया है। क्षेत्र को घेर लिया गया है और फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया है।

जानकारी के अनुसार, बेसमेंट और ग्राउंड फ्लोर पर कपड़े और कॉस्मेटिक का शोरूम था, जबकि ऊपर की मंजिलों पर परिवार रहता है। आग ने कुछ ही समय में विकराल रूप ले लिया। स्थानीय लोगों का कहना है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी, जबकि उस समय घर में सो रहे लोग गहरी नींद में थे। दमकल विभाग के अनुसार, सुबह करीब 7 बजे पालम मेट्रो स्टेशन के पास गली नंबर-2 में आग लगने की सूचना मिली थी। घटनास्थल पर पहुंचने पर सात घायलों, जिनमें तीन बच्चे भी शामिल थे, को दमकलकर्मियों ने सुरक्षित बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया। आग लगने के शुरुआती दौर में इमारत से कूदने वाले दो लोगों को भी इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। इनमें से तीन बच्चों सहित कुल नौ लोगों की मौत हो गई। आग लगने की घटना सुबह लगभग 6:40 बजे हुई, जब अधिकांश लोग गहरी नींद में सो रहे थे। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और धुआं पूरे मकान में फैल गया, जिससे अफरा-तफरी का माहौल बन गया। दमकल विभाग पर भी गंभीर आरोप लग रहे हैं।

राजस्थान में तेल से भरा टैंकर पलटा, आग लगी -ड्राइवर जिंदा जला

सांचौर (जालोर)। राजस्थान के जालोर जिले में जैसलमेर-जामनगर नेशनल हाईवे (एनएच-68) पर तेल टैंकर पलट गया और उसमें आग लग गई। इसके बाद सड़क पर 200 मीटर तक लपटें फैल गईं। टैंकर का ड्राइवर जिंदा जल गया, जबकि हेल्पर समय रहते कूद गया। हादसा बुधवार दोपहर करीब 2 बजे हुआ। फायर ब्रिगेड ने 1 घंटे बाद आग पर काबू पा लिया। जानकारी के अनुसार, टैंकर बाड़मेर से गुजरात की तरफ जा रहा था। इस दौरान सिवाड़ा ओवरब्रिज पर पलट गया। हादसे के बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। सांचौर एसडीएम प्रमोद कुमार और सिवाड़ा चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। चितलवाना थाने के एसआई मोहनलाल ने बताया- गुजरात नंबर का टैंकर बाड़मेर से गुजरात की ओर जा रहा था। हादसे में बाड़मेर के गुड़ामालानी के मोखावा निवासी ड्राइवर सुखराम (34) पुत्र देदाराम मेघवाल की मौत हो गई, जबकि उसके बुआ के बेटे नरसीराम (26) पुत्र जोधाराम मेघवाल की जान बच गई।

एक साथ जली 8 चिताएं...इलेक्ट्रिक कार को चार्जिंग लगाकर सोया था परिवार

डिजिटल लॉक नहीं खुले, लोग अंदर फंसे रह गए

अग्निकांड में मौत

इंदौर। इंदौर में इलेक्ट्रिक कार टाटा पंच में चार्जिंग के दौरान शॉर्ट सर्किट होने से आग लग गई, जिसने तीन मंजिला मकान को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में रबर कारोबारी मनोज पुगलिया, उनकी गर्भवती बहू सिमरन सहित 8 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 लोग घायल हैं। मारे गए लोगों में से 6 मनोज के रिश्तेदार थे, जो मंगलवार को बिहार के किशनगंज से आए थे। घटना बुधवार तड़के 3.30 से 4 बजे के बीच बंगाली चौराहे के पास ग्रेटर बृजेश्वरी कॉलोनी की है। पुलिस के अनुसार, कार से घर तक फैली आग ने अंदर रखे गैस सिलेंडरों को अपनी चपेट में ले लिया। इससे एक के बाद एक सिलेंडर फटने लगे। धमाका इतना तेज था कि मकान का एक हिस्सा ढह गया। घर में लगे डिजिटल लॉक खुल नहीं पाए, इसके कारण अंदर सो रहे लोगों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला। बिहार के किशनगंज निवासी बिजली देवी ने बताया कि विजय सेठिया कॉस्मेटिक कारोबार से जुड़े थे। उन्हें जबड़े में कैंसर था। इसलिए वह ऑपरेशन कराने परिवार के साथ अपने बेटी-दामाद के घर इंदौर गए थे। पड़ोसी दुकानदार सौरभ ने बताया कि विजय सेठिया इलाज कराने के लिए इंदौर गए थे, लेकिन वहां हादसे में उनकी पत्नी, बेटे, बहन और बहनोई समेत उनकी भी मौत हो गई। सौरभ के अनुसार, विजय सेठिया की किशनगंज में दो दुकानें हैं। वे इन दिनों अपना नया घर भी बनवा रहे थे। सौरभ ने बताया कि कुछ दिन पहले ही वह इलेक्ट्रॉनिक सामान लेकर उनके घर गए थे।

राज्यसभा सांसदों की विदाई पर बोले पीएम मोदी, राजनीति में कोई फुल स्टाप नहीं होता

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को राज्यसभा के सेवानिवृत्त सदस्यों के योगदान की तारीफ करते हुए संसदीय परंपराओं और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने में उनकी भूमिका की सराहना की। विदाई सत्र के दौरान बोलते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उच्च सदन एक सतत संस्था है जहां अनुभव और ज्ञान अमूल्य है। सदस्यों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि राजनीति में कोई विराम नहीं है। इस बात पर जोर देते हुए कि लोक सेवा का सफर औपचारिक कार्यकाल के बाद भी जारी रहता है। उन्होंने अनुभवी नेताओं से सीखने के महत्व पर भी बल दिया और कहा कि युवा सदस्यों को अनुभवी सांसदों से प्रेरणा और मार्गदर्शन लेना चाहिए। मोदी ने कहा कि सदन के अंदर अनेक विषयों पर चर्चाएं होती हैं, हर किसी का महत्वपूर्ण योगदान होता है, कुछ खट्टे मीठे अनुभव भी रहते हैं। लेकिन, जब ऐसा अवसर आता है, तो स्वाभाविक रूप से दलगत भावना से ऊपर उठकर हम सबके भीतर एक समान भाव प्रकट होता है कि हमारे ये साथी अब किसी और विशेष काम के लिए आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज यहां से जो साथी विदाई ले रहे हैं, उनमें से कुछ फिर से आने के लिए विदाई ले रहे हैं और कुछ विदाई के बाद यहां का अनुभव

लेकर सामाजिक जीवन में कुछ न कुछ विशेष योगदान के लिए जा रहे हैं। जो जा रहे हैं, लेकिन आने वाले नहीं हैं, उनको भी मैं कहना चाहूंगा कि राजनीति में कोई फुलस्टॉप नहीं होता है, भविष्य आपका भी इंतजार कर रहा है और आपका अनुभव, आपका योगदान राष्ट्र जीवन में हमेशा बना रहेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस सदन से आज जो भी हमारे सदस्य विदाई ले रहे हैं, उनमें से कुछ सदस्य ऐसे हैं, जिनका शायद उस समय जाने का कार्यकाल आएगा, जब सदन नहीं चल रहा होगा। कुछ ऐसे हैं, जिन्हें already सदन के दौरान ही विदाई मिल रही है। उन्होंने कहा कि मैं जरूर कहूंगा कि आदरणीय देवेगौड़ा जी, आदरणीय खड़गे जी, आदरणीय शरद पवार जी ऐसे वरिष्ठ लोग हैं, जिनके जीवन की आधे से अधिक उम्र संसदीय कार्यप्रणाली में गई है और इतने लंबे अनुभव के बाद भी सभी नए सांसदों को इनसे सीखना चाहिए कि समर्पित भाव से सदन में आना, जो उनसे बन सकता है, उतना योगदान करना। यानी समाज में से जो जिम्मेदारी मिली है, उसके प्रति पूरी तरह समर्पित रहना। ये इन सब वरिष्ठ लोगों से हम जैसे सबको सीखना चाहिए। मैं उनके योगदान की भूरि-भूरि सराहना करूंगा। मोदी ने कहा कि उसी प्रकार से हमारे उप सभापति हरिवंश जी विदाई ले रहे हैं। हरिवंश जी को लंबे समय तक इस सदन में अपनी जिम्मेदारी निभाने का अवसर मिला है। ये बहुत ही मृदुभाषी हैं और सदन को चलाने में सबका विश्वास जीतने का इन्होंने निरंतर प्रयास किया है। इस सदन में से हर 2 साल के अंतराल के बाद एक बड़ा समूह हमारे बीच से जाता है। लेकिन ये ऐसी व्यवस्था है कि जो नया समूह आता है, उनको 4 साल से यहां बैठे साथियों से कुछ न कुछ सीखने का अवसर मिलता है। इसलिए एक प्रकार से यहां की विरासत एक प्रक्रिया जारी रहती है। मुझे विश्वास है कि जिनको इस बार जाना नहीं है, आने वाले नए सांसदों को उनके अनुभव का लाभ मिलेगा और उनका योगदान भी सदन को और समृद्ध करेगा।

एक साथ उठीं नौ अर्थियां - मंजर देख छलक उठे लोगों के आंसू, सदमे में परिजन; देर शाम में ही करा दिया अंतिम संस्कार

नई दिल्ली। दिल्ली के दक्षिण-पश्चिमी जिले के पालम इलाके के साध नगर में एक बहुमंजिला इमारत में भीषण आग लगने की घटना सामने आई है। आग की इस घटना में से नौ लोगों की मौत हो गई है, कई लोगों के घायल होने की खबरें आ रही हैं।

आग पर काबू पाने के लिए दमकल विभाग की 30 गाड़ियां मौके पर पहुंची। जानकारी के मुताबिक, आग लगने की इस घटना की शुरुआत सुबह हुई, जब ग्राउंड फ्लोर पर स्थित कॉस्मेटिक की दुकान में आग लगी। आग तेजी से ऊपरी मंजिलों तक फैल गई। आग तेजी से फैली और इमारत के अंदर धुएं का गुबार छा गया। इस कारण अंदर रह रहे लोग बाहर नहीं निकल पाए और मदद के लिए पुकारने लगे। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की 30 गाड़ियां मौके पर पहुंच गईं और राहत-बचाव कार्य

शुरू कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि तीन अन्य घायल हुए हैं, जिनमें से दो ने आग से बचने के लिए राम चौक मार्केट, पलम मेट्रो स्टेशन के पास इमारत से कूदने का प्रयास किया। दमकल विभाग के अनुसार, सुबह करीब 7.04 बजे पालम मेट्रो स्टेशन के पास गली नंबर-2 स्थित एक बिल्डिंग के घर में आग लगने की कॉल मिली थी। सूचना मिलते ही तुरंत 30 दमकल की गाड़ियां मौके पर रवाना की गईं। पांच मंजिला इमारत में ग्राउंड और पहली मंजिल पर कपड़ा और कॉस्मेटिक शोरूम था, जबकि शोरूम के मालिक राजेंद्र कश्यप का परिवार दूसरी और तीसरी मंजिल पर रहता था। राजेंद्र कश्यप मार्केट के प्रधान भी हैं। इमारत से बचाए गए लोगों में से नौ को अस्पताल में मृत घोषित किया गया। मृतकों में प्रवेश (33), कमल (39), आशु (35), लाडो (70), हिमांशी (22), दीपिका (28) और तीन बच्चे मिल हैं। सचिन (29), अनिल (32) और एक दो वर्षीय लड़की इलाज चल रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह कॉस्मेटिक शॉप थी। घर के अंदर ही शोरूम बनाया हुआ था। स्थानीय लोगों का दावा है कि शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी। जब आग लगी, तो घर में रहने वाले सब सो रहे थे। मौके से मिली वीडियो फुटेज में इमारत से धुएं के मोटे बादल उठते और आग की लपटें दिखाई दे रही थीं, जबकि दमकलकर्मी संकरी गलियों और धुएं से भरे इंटीरियर्स में प्रवेश कर लोगों को सुरक्षित निकालने का प्रयास कर रहे थे। अधिकारियों ने कहा कि आग को काबू में कर लिया गया है। क्षेत्र को घेर लिया गया है और फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया है। आग के कारण का अभी पता नहीं चल पाया है, और जांच जारी है। दिल्ली पुलिस के पालम थाने के पुलिसकर्मियों ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर दीवार तोड़ने की भी कोशिश की ताकि दीवार तोड़कर लोगों को बचाया जा सके।

सीएम रेखा गुप्ता ने मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि पालम में बहुमंजिला आवासीय इमारत में लगी आग की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में जानकर गहरा दुख हुआ। जिला प्रशासन, दिल्ली फायर सर्विस विभाग और दिल्ली पुलिस बचाव अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। घटना की जांच के लिए मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए गए हैं। सभी की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करती हूं।

बंगाल में ईसी का बड़ा एक्शन, चुनाव से पहले बदले 11 जिलों के डीएम; कोलकाता नगर निगम कमिश्नर को भी हटाया

चुनाव आयोग ने 13 आईएएस अधिकारियों का तबादला किया। निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करना मुख्य लक्ष्य। अधिकारियों को 19 मार्च तक नई पोस्टिंग पर ज्वाइन करना होगा।

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में चुनाव से पहले तबादलों का दौर जारी है। बीते दिनों चीफ सेक्रेटरी, होम सेक्रेटरी, डीजीपी और कई आला पुलिस अधिकारियों की तबादले और नियुक्तियों के बाद चुनाव आयोग ने बुधवार को जारी आदेश में 13 आईएएस अधिकारियों को नए जिलों में जिलाधिकारी (डीएम) और जिला चुनाव अधिकारी (डीईओ) की जिम्मेदारी सौंपी है। ये अधिकारी अब जिला स्तर पर चुनाव की तैयारियों को करीब से मॉनिटर करेंगे और निष्पक्ष व पारदर्शी मतदान सुनिश्चित करने की बड़ी भूमिका निभाएंगे। चुनाव आयोग का साफ निर्देश है कि ये बदलाव तुरंत लागू हों। सभी अधिकारियों को 19 मार्च दोपहर 3 बजे तक अपनी नई पोस्टिंग पर जॉइन करने की पुष्टि करनी होगी। साथ ही, जिन अधिकारियों को हटाया गया है, उन्हें चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक किसी भी चुनाव संबंधी काम पर नहीं लगाया जाएगा। स्मिता पांडे को कोलकाता नगर निगम की म्यूनिसिपल कमिश्नर और कोलकाता नॉर्थ के डीईओ की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं, रंधीर कुमार को कोलकाता साउथ का डीईओ बनाया गया है। ये सभी अधिकारी अब जिला स्तर पर चुनाव की निगरानी के साथ-साथ कई जगहों पर ऑब्जर्वर की भूमिका भी निभाएंगे। चुनाव आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इनकी नियुक्ति का मकसद पूरी तरह निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराना है।

बेरोजगारी बढ़ाने में धुरंधर है मोदी सरकार- जयराम रमेश

नई दिल्ली। कांग्रेस ने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बुधवार को कहा कि मोदी सरकार के पास बेरोजगारी जैसे महासंकट का कोई समाधान नहीं है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए यह आरोप लगाया कि मोदी सरकार बेरोजगारी बढ़ाने में धुरंधर है। रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, बेतहाशा बेरोजगारी बढ़ाने में धुरंधर मोदी सरकार। कोई ताज्जुब नहीं होता जब प्रधानमंत्री अपने चुनावी भाषणों में युवाओं द्वारा रील बनाने को अपनी सरकार की मुख्य उपलब्धि के तौर पर गिनाते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के पास इसके अलावा कोई चारा भी नहीं है, क्योंकि भारत में पढ़े-लिखे, डिग्रीधारी युवाओं में

बेरोजगारी के जो आंकड़े लगातार सामने आ रहे हैं, वे बेहद चिंताजनक हैं; इसलिए उनमें साहस नहीं है कि वह रोजगार पर बात कर लें। रमेश ने रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा, 20 से 29 वर्ष की उम्र के 6.3 करोड़ स्नातक में से करीब 1.1 करोड़ युवा बेरोजगार हैं। सिर्फ सात प्रतिशत स्नातक ही बेरोजगार होने के एक साल के भीतर स्थायी वेतन वाली नौकरी हासिल कर पाते हैं। शिक्षा में युवाओं (पुरुषों) की हिस्सेदारी 2017 में 38 प्रतिशत से घटकर 2024 के अंत तक 34 प्रतिशत हो गई। कांग्रेस नेता के अनुसार, आर्थिक मजबूरी के कारण युवा पढ़ाई छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। उन्होंने कहा, 2017 में जहां 58 प्रतिशत युवाओं ने घर की आय में सहयोग के लिए पढ़ाई छोड़ी, वहीं 2023 में यह आंकड़ा बढ़कर 72 प्रतिशत हो गया। ऐसी और भी कई रिपोर्ट्स लगातार सामने आ चुकी हैं। रमेश ने कटाक्ष करते हुए कहा, देश की जनता को लाइन में लगाने में माहिर इस सरकार में युवा नौकरी की लाइन में लगा है, लेकिन नौकरी नहीं है। प्रधानमंत्री के पास, हर थोड़े-थोड़े दिन में ध्यान भटकाने के लिए कोई न कोई नया एजेंडा लाने के अलावा, इस महासंकट का कोई समाधान नहीं है।

पश्चिम एशिया संकट : हत्यारों को जल्द चुकानी होगी कीमत, लारीजानी की मौत के बाद ईरान के मोजतबा की चेतावन

वर्ल्ड डेस्क। ईरान के नए सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ने देश के सुरक्षा प्रमुख अली लारीजानी की मौत को लेकर बुधवार को सार्वजनिक बयान जारी किया। ईरान की अर्ध-सरकारी तस्नीम समाचार एजेंसी की ओर से जारी बयान में खामेनेई के हवाले से कहा गया कि उन्हें गहरे दुख के साथ लारीजानी की मौत की खबर मिली। उन्होंने उन्हें बुद्धिमान, प्रतिबद्ध व्यक्ति और ईरान की राजनीतिक व्यवस्था का एक प्रमुख चेहरा बताया। उन्होंने आगे कहा, ऐसे व्यक्ति की हत्या यह दिखाती है कि वह कितने अहम थे और इस्लाम के दुश्मनों में उनके प्रति कितनी नफरत थी। सर्वोच्च नेता ने कहा, इस्लाम विरोधियों को यह जान लेना चाहिए कि

इस खून से इस्लामी व्यवस्था और मजबूत होगी और हर खून की एक कीमत होती है, जिसे शहीदों के इन अपराधी हत्यारों को जल्द चुकानी होगी। उधर, ईरान की चेतावनी के बाद कतर के रास लाफान एलएनजी सुविधाओं से लोगों को बाहर निकाला जा रहा है। मामले से जुड़े एक सूत्र ने रॉयटर्स को बताया कि खाड़ी क्षेत्र के प्रमुख ऊर्जा ढांचे पर हमलों की आशंका के बीच यह कदम उठाया गया है। ईरानी सरकारी मीडिया के अनुसार, तेहरान ने सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और कतर में कई तेल प्रतिष्ठानों के लिए अलर्ट जारी किया है और कहा है कि इन जगहों को आने वाले घंटों में निशाना बनाया जा सकता है। सऊदी अरब के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि पूर्वी क्षेत्र की ओर आ रहे दो बैलिस्टिक मिसाइलों को इंटरसेप्ट कर नष्ट कर दिया गया। यह जानकारी सरकारी टीवी के हवाले से दी गई है। यूएई ने ईरान के दक्षिण पार्स गैस फील्ड पर इस्राइल के हमले की निंदा करते हुए इसे तनाव में खतरनाक बढ़ोतरी बताया। यूएई के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा, संयुक्त अरब अमीरात यह मानता है कि ईरान में दक्षिण पार्स गैस फील्ड से जुड़े ऊर्जा प्रतिष्ठानों को निशाना बनाना तनाव में एक खतरनाक बढ़ोतरी है। बयान में कहा गया, ऊर्जा ढांचे को निशाना बनाना वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए सीधा खतरा है। इससे गंभीर पर्यावरणीय प्रभाव भी पड़ सकते हैं और नागरिकों, समुद्री सुरक्षा तथा महत्वपूर्ण नागरिक और औद्योगिक ढांचे के लिए सीधा जोखिम पैदा होता है।

आंधी-तूफान और बारिश से मौसम हुआ कूल-कूल

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली समेत पूरे एनसीआर में मौसम का मिजाज बदल गया है. आज दोपहर के बाद से कई इलाकों में बादल छाये हुए हैं. कुछ इलाकों में तेज आंधी के साथ बारिश भी हुई है. दोपहर में बादलों के छाने के बाद मौसम ऐसा हो गया था मानो शाम हो गई हो. मौसम विभाग ने पहले ही तीन दिनों के लिए दिल्ली-एनसीआर में बारिश के आसार जताए थे. दो-तीन पहले भी दिल्ली के कुछ इलाकों में हल्की बारिश हुई थी. पहाड़ों पर भी बर्फबारी हो रही है. कुछ दिन पहले तक दिल्ली समेत उत्तर भारत में जहां तेज धूप ने लोगों को भीषण गर्मी का अहसास कराना शुरू कर दिया था, वहीं अब कहानी बदल गई है. दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में घने बादल की वजह से अंधेरा छा गया है. तेज आंधी के साथ बारिश हो रही है. खराब मौसम की वजह से कुछ जगहों पर ट्रैफिक जाम की भी खबरें सामने आ रही हैं.

अगले दो तीन दिन बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, 19 और 20 मार्च को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे और एक या दो बार बारिश या गरज के साथ छींटे पड़ने की संभावना है. इन दोनों दिनों अधिकतम तापमान 29 और 28 डिग्री सेल्सियस वहीं न्यूनतम तापमान 16 और 17 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है. 21 मार्च को आमतौर पर बादल छाए रहेंगे और हल्की बारिश हो सकती है. इसके बाद

दिल्ली-एनसीआर में मौसम ने मार्च में लिया यू-टर्न

22 और 23 मार्च को फिर आंशिक रूप से बादल छाए रहने और मुख्य रूप से साफ आसमान के आसार है. मौसम विभाग ने अगले सप्ताह अधिकतम और न्यूनतम तापमान में किसी बड़ी बढ़ोतरी की संभावना से भी इनकार किया है, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिलने की उम्मीद है. एक्यूआई में जबरदस्त सुधार, फिर और गिरावट के आसार बारिश की संभावना के बीच एनसीआर के

विभिन्न शहरों में एक्यूआई में भी सुधार दर्ज किया गया है.

आखिर कैसे बदल गया मौसम का मिजाज?

दिल्ली-एनसीआर में मौसम में यह अचानक बदलाव एक एक्टिव वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से आया है. भूमध्य सागर से उठी नमी वाली इन हवाओं ने जब मैदानी इलाकों की शुरुआती गर्मी से संपर्क किया, तो वायुमंडल में अस्थिरता पैदा हुई, जिससे घने बादल छा गए और धूल भरी आंधी के साथ बारिश शुरू हो गई. मौसम विभाग के अनुसार, यह सिस्टम अगले 2-3 दिनों तक सक्रिय रहेगा, जिससे तापमान में गिरावट आएगी और लोगों को गर्मी से राहत मिलेगी.

हिमाचल में बर्फबारी का येलो अलर्ट

हिमाचल प्रदेश मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार 18,19 और 20 मार्च को प्रदेश के कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश या बर्फबारी होने की संभावना है. वहीं, 18 और 21 मार्च को भी कुछ क्षेत्रों में हल्की बारिश या बर्फबारी देखने को मिल सकती है. इसके अलावा 20 मार्च को भी राज्य के कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश और बर्फबारी के आसार जताए गए है. ऐसे में मौसम विभाग ने लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी है.

उत्तराखंड में भी बर्फबारी

उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में मौसम का मिजाज बदल चुका है. चमोली जिले के ऊपरी क्षेत्रों में जमकर बर्फबारी हुई है, जबकि निचले इलाकों में तापमान में भारी गिरावट दर्ज की गई है. मौसम विभाग ने राज्य के कई जिलों में भारी बारिश और बर्फबारी का पूर्वानुमान जारी किया गया था.बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब सहित ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जमकर बर्फबारी हुई, जबकि निचले इलाकों में भी ठंड बढ़ गई है.

राजस्थान के कई हिस्सों में आंधी-बारिश और ओले का अलर्ट

दिल्ली-एनसीआर के साथ-साथ राजस्थान में भी आंधी बारिश और ओले की संभावना है. मौसम विभाग ने बताया कि नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से दक्षिण पश्चिम राजस्थान और आसपास के क्षेत्र के ऊपर परिसंचरण तंत्र बनने की पूरी संभावना है.

इसके असर से 18-20 मार्च को कुछ स्थानों पर 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चलने और बारिश होने तथा कहीं-कहीं ओले पड़ने का अनुमान है.19-20 मार्च को विक्षोभ का सर्वाधिक असर रहने और जोधपुर, बीकानेर, अजमेर, जयपुर, भरतपुर, उदयपुर व कोटा संभाग के कुछ हिस्सों में बादल गरजने के साथ 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चलने और बारिश होने की संभावना है.